اِلَيۡهِ يُرَدُّ عِلۡمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخۡرُجُ مِنۡ ثَمَرٰتٍ

अल्लाह ही की तरफ क़यामत का इल्म लौटाया जाता है। जो फल भी अपने खौलों से

مِّنۡ اَكۡمَامِهَا وَمَا تَحۡمِلُ مِنۡ اُنۡثٰى وَلَا تَضَعُ

निकलते हैं और जो कोई मादा हामिला होती है और वज़्अे हमल करती है वो सब ही

اِلَّا بِعِلۡمِهٖ ؕ وَيَوۡمَ يُنَادِيۡهِمۡ اَيۡنَ شُرَكَآءِىۡ ؕ قَالُوۡۤا

अल्लाह के इल्म से होता है। और जिस दिन अल्लाह उन को पुकारेगा के कहाँ हैं मेरे शुरका? तो वो कहेंगे

اٰذَنّٰكَ ؕ مَا مِنَّا مِنۡ شَهِيۡدٍ ۚ﴿۴۷﴾ وَضَلَّ عَنۡهُمۡ

हम आप से यही अर्ज़ करते हैं के हम में कोई मुद्दई नहीं। और उन से खो जाएंगे

مَّا كَانُوۡا يَدۡعُوۡنَ مِنۡ قَبۡلُ وَظَنُّوۡا مَا لَهُمۡ

वो जिन को इस से पेहले वो पुकारा करते थे और वो जान लेंगे के उन के लिए कोई बचने की

مِّنۡ مَّحِيۡصٍ ﴿۴۸﴾ لَا يَسۡـَٔمُ الۡاِنۡسَانُ مِنۡ دُعَآءِ الۡخَيۡرِ ۫

राह नहीं है। इन्सान भलाई मांगने से थकता नहीं है।

وَاِنۡ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوۡسٌ قَنُوۡطٌ ﴿۴۹﴾ وَلَئِنۡ اَذَقۡنٰهُ

और अगर उस को मुसीबत पहोंचे तो मायूस और नाउम्मीद हो जाता है। और अगर हम उसे चखाएँ

رَحۡمَةً مِّنَّا مِنۡۢ بَعۡدِ ضَرَّآءَ مَسَّتۡهُ لَيَقُوۡلَنَّ هٰذَا

हमारी तरफ से मेहरबानी किसी तकलीफ के बाद जो उस को पहोंची थी, तो ज़रूर कहेगा के ये तो मेरे

لِىۡ ۙ وَمَاۤ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنۡ رُّجِعۡتُ

लाइक़ है। और मैं क़यामत क़ाइम होने वाली गुमान नहीं करता। और अगर मैं मेरे रब की तरफ लौटाया

اِلٰى رَبِّىۡۤ اِنَّ لِىۡ عِنۡدَهٗ لَلۡحُسۡنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا

भी गया तो मेरे लिए उस के पास भलाई ही होगी। फिर हम ज़रूर काफिरों को उन के

بِمَا عَمِلُوۡا وَلَنُذِيۡقَنَّهُمۡ مِّنۡ عَذَابٍ غَلِيۡظٍ ﴿۵۰﴾

अमल बतलाएंगे। और हम उन्हें सख्त अज़ाब चखाएँगे।

وَاِذَاۤ اَنۡعَمۡنَا عَلَى الۡاِنۡسَانِ اَعۡرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ

और जब हम इन्सान पर इन्आम करते हैं तो वो ऐराज़ करता है और अपना पेहलू दूर हटा लेता है।

وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوۡ دُعَآءٍ عَرِيۡضٍ ﴿۵۱﴾ قُلۡ

और जब उसे तकलीफ पहोंचती है तो वो लम्बी दुआ करने वाला बन जाता है। आप फरमा दीजिए

اَرَءَيۡتُمۡ اِنۡ كَانَ مِنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ ثُمَّ كَفَرۡتُمۡ
के भला ये बतलाओ अगर ये कुरआन अल्लाह की तरफ़ से हो, फिर तुम उस के साथ कुफ़्र

بِهٖ مَنۡ اَضَلُّ مِمَّنۡ هُوَ فِىۡ شِقَاقٍۢ بَعِيۡدٍ ۝۵۲
करो तो उस से ज़्यादा गुमराह कौन है जो दूर वाली गुमराही में है?

سَنُرِيۡهِمۡ اٰيٰتِنَا فِى الۡاٰفَاقِ وَفِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ
अनक़रीब हमारी आयतें हम उन्हें दिखाएंगे अतराफ़े आलम में, और खुद उन की ज़ात में,

حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمۡ اَنَّهُ الۡحَقُّ ؕ اَوَلَمۡ يَكۡفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ
ताके उन के सामने वाज़ेह हो जाए के यही हक़ है। क्या आप के रब के लिए ये काफी नहीं है के वो

عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ شَهِيۡدٌ ۝۵۳ اَلَاۤ اِنَّهُمۡ فِىۡ مِرۡيَةٍ
हर चीज़ पर निगरान है? सुनो! यक़ीनन वो अपने रब की

مِّنۡ لِّقَآءِ رَبِّهِمۡ ؕ اَلَاۤ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَىۡءٍ مُّحِيۡطٌ ۝۵۴ ع
मुलाक़ात की तरफ से शक में हैं। सुनो! यक़ीनन वो हर चीज़ का इहाता किए हुवे है।

اٰيَاتُهَا ۵۳ (۴۲) سُوۡرَةُ الشُّوۡرٰى مَكِّيَّةٌ (۶۲) رُكُوۡعَاتُهَا ۵
उस में ५३ आयतें हैं सूरह शूरा मक्का में नाज़िल हुई और ५ रूकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ۝
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ۝۱ عٓسٓقٓ ۝۲ كَذٰلِكَ يُوۡحِىۡۤ اِلَيۡكَ
हॉ मीम। ऐन सीन क़ाफ़। इसी तरह अल्लाह वही भेजता है आप की तरफ

وَاِلَى الَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِكَ ۙ اللّٰهُ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۝۳ لَهٗ
और उन (अम्बिया) की तरफ जो आप से पेहले थे। वो ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है। उस की

مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ وَهُوَ الۡعَلِىُّ
मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो आसमानों में और ज़मीन में हैं। और वो बरतर है,

الۡعَظِيۡمُ ۝۴ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرۡنَ
बड़ा है। क़रीब है के आसमान फट जाएं

مِنۡ فَوۡقِهِنَّ وَ الۡمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوۡنَ بِحَمۡدِ رَبِّهِمۡ
उन के ऊपर से और फरिशते तस्बीह पढ़ रहे हैं अपने रब की हम्द के साथ

وَ يَسۡتَغۡفِرُوۡنَ لِمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ اللّٰهَ

और ज़मीन वालों के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं। सुनो! यक़ीनन अल्लाह

هُوَ الۡغَفُوۡرُ الرَّحِيۡمُ ۝٥ وَالَّذِيۡنَ اتَّخَذُوۡا

बहोत ज़्यादा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है। और वो लोग जिन्हों ने अल्लाह के सिवा

مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيۡظٌ عَلَيۡهِمۡ ۖ وَمَاۤ اَنۡتَ

हिमायती बना लिए हैं, तो अल्लाह उन की निगरानी कर रहा है। और आप

عَلَيۡهِمۡ بِوَكِيۡلٍ ۝٦ وَ كَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَاۤ اِلَيۡكَ

उन के ज़िम्मेदार नहीं। और हम ने इसी तरह आप पर क़ुरआने अरबी वही के ज़रिए से

قُرۡاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنۡذِرَ اُمَّ الۡقُرٰى وَمَنۡ حَوۡلَهَا

नज़िल किया है ताके आप डराएं मक्का वालों को और उन को जो उस के इर्द गिर्द हैं,

وَتُنۡذِرَ يَوۡمَ الۡجَمۡعِ لَا رَيۡبَ فِيۡهِ ؕ فَرِيۡقٌ فِى الۡجَنَّةِ

और आप डराएं जमा होने के दिन से जिस में कोई शक नहीं। एक जमाअत जन्नत में होगी

وَ فَرِيۡقٌ فِى السَّعِيۡرِ ۝٧ وَلَوۡ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمۡ اُمَّةً

और एक जमाअत दोज़ख में होगी। और अगर अल्लाह चाहता तो उन को एक ही उम्मत

وَّاحِدَةً وَّلٰكِنۡ يُّدۡخِلُ مَنۡ يَّشَآءُ فِىۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ

बना देता, लेकिन अल्लाह अपनी रहमत में दाखिल करता है जिसे चाहता है।

وَ الظّٰلِمُوۡنَ مَا لَهُمۡ مِّنۡ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيۡرٍ ۝٨

और ज़ालिमों के लिए कोई हिमायती और मददगार नहीं होगा।

اَمِ اتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اَوۡلِيَآءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الۡوَلِىُّ

क्या उन्हों ने अल्लाह के अलावा हिमायती बना लिए हैं? फिर अल्लाह वही कारसाज़ है

وَهُوَ يُحۡىِ الۡمَوۡتٰى ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۝٩ ع

और वो मुर्दों को ज़िन्दा करता है। और वो हर चीज़ पर क़ुदरत वाला है।

وَمَا اخۡتَلَفۡتُمۡ فِيۡهِ مِنۡ شَىۡءٍ فَحُكۡمُهٗۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ

और जिस चीज़ में भी तुम इखतिलाफ करो तो उस का फैसला अल्लाह के सुपुर्द है।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّىۡ عَلَيۡهِ تَوَكَّلۡتُ ۖ وَاِلَيۡهِ اُنِيۡبُ ۝١٠

यही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर मैं ने तवक्कुल किया। और उसी की तरफ मैं मुतवज्जेह होता हूँ।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ جَعَلَ لَكُمْ

वो अल्लाह आसमानों और ज़मीन को पैदा करने वाला है। उस ने तुम्हारे लिए खुद तुम्हीं

مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ

में से जोड़े बनाए और चौपाओं के जोड़े बनाए।

يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ؕ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ

वो तज़वीज सें तुम्हारी नस्लें चलाता है। कोई चीज़ उस की मिस्ल नहीं। और वो सुनने वाला,

الْبَصِيْرُ ﴿١١﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ

देखने वाला है। उस के पास आसमानों और ज़मीन की कुन्जियाँ हैं। वो रोज़ी

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يَقْدِرُ ؕ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ

कुशादा करता है जिस के लिए चाहता है और तंग करता है जिस के लिए चाहता है। यक़ीनन वो हर चीज़ को खूब

عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾ شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ

जानता है। अल्लाह ने तुम लोगों के वास्ते वही दीन मुक़र्रर किया जिस का उस ने हुक्म दिया था नूह (अलैहिस्सलाम)

نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ

को और जिस को हम ने आप के पास वही के ज़रिए भेजा है और जिस का हम ने इब्राहीम (अलैहिस्सलाम)

اِبْرٰهِيْمَ وَ مُوْسٰى وَ عِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ

और मूसा (अलैहिस्सलाम) और ईसा (अलैहिस्सलाम) को हुक्म दिया था के इसी दीन को क़ाइम रखना

وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ؕ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ

और उस में तुम तफरक़ा मत डालना। मुशरिकीन पर भारी है वो जिस की

مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ؕ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ

तरफ आप उन को बुलाते हैं। अल्लाह अपनी तरफ मुन्तखब करते हैं जिसे चाहते हैं

وَ يَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا

और अपनी तरफ हिदायत देते हैं उसी को जो मुतवज्जेह होता है। और वो अलग अलग फिरक़े नहीं बने

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ

मगर इस के बाद के उन के पास इल्म आया उन की आपस की ज़िद की वजह से।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ

और अगर एक बात तेरे रब की तरफ से पेहले से न हो चुकी होती एक मुक़र्ररा किए हुए आखिरी वक़्त तक की तो उन के

بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّ الَّذِيۡنَ اُوۡرِثُوا الۡكِتٰبَ

दरमियान फेसला कर दिया जाता। और वो जो किताब के वारिस बनाए गए

مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ لَفِىۡ شَكٍّ مِّنۡهُ مُرِيۡبٍ ﴿١٤﴾ فَلِذٰلِكَ فَادۡعُ ۚ

उन के बाद अलबत्ता वो उस की तरफ से बड़े शक में हैं। तो उसी दीन की तरफ आप दावत दीजिए।

وَاسۡتَقِمۡ كَمَاۤ اُمِرۡتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعۡ اَهۡوَآءَهُمۡ ۚ وَقُلۡ

और आप इस्तिक़ामत इख्तियार कीजिए जैसा आप को हुक्म दिया गया है। और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए। और

اٰمَنۡتُ بِمَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ مِنۡ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرۡتُ لِاَعۡدِلَ

यूँ कहिए के मैं ईमान लाया उस किताब पर जो अल्लाह ने उतारी है। और मुझे हुक्म दिया गया है के मैं तुम्हारे

بَيۡنَكُمۡ ؕ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَ رَبُّكُمۡ ؕ لَنَاۤ اَعۡمَالُنَا

दरमियान इन्साफ करूँ। अल्लाह हमारा और तुम्हारा रब है। हमारे लिए हमारे आमाल हैं

وَلَـكُمۡ اَعۡمَالُكُمۡ ؕ لَا حُجَّةَ بَيۡنَنَا وَ بَيۡنَكُمۡ ؕ اَللّٰهُ

और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं। हमारे और तुम्हारे दरमियान कोई बहस नहीं है। अल्लाह

يَجۡمَعُ بَيۡنَنَا ۚ وَاِلَيۡهِ الۡمَصِيۡرُ ﴿١٥﴾ وَالَّذِيۡنَ يُحَآجُّوۡنَ

हमें इकठ्ठा करेगा। और उसी की तरफ लौटना है। और जो हुज्जतबाज़ी करते हैं

فِى اللّٰهِ مِنۡۢ بَعۡدِ مَا اسۡتُجِيۡبَ لَهٗ حُجَّتُهُمۡ

अल्लाह के बारे में इस के बाद के अल्लाह को मान लिया गया, उन की हुज्जत

دَاحِضَةٌ عِنۡدَ رَبِّهِمۡ وَ عَلَيۡهِمۡ غَضَبٌ وَّلَهُمۡ

उन के रब के यहाँ बातिल है, और उन पर गज़ब है और उन के लिए

عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ﴿١٦﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ الۡكِتٰبَ

सख्त अज़ाब है। अल्लाह ही ने किताब उतारी

بِالۡحَـقِّ وَالۡمِيۡزَانَ ؕ وَمَا يُدۡرِيۡكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ

हक़ के साथ और मीज़ान को उतारा। और आप को क्या खबर, अजब नहीं के क़यामत

قَرِيۡبٌ ﴿١٧﴾ يَسۡتَعۡجِلُ بِهَا الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ بِهَا ۚ

क़रीब हो। उस को जल्दी तलब कर रहे हैं वो जो क़यामत पर ईमान नहीं रखते।

وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مُشۡفِقُوۡنَ مِنۡهَا ۙ وَ يَعۡلَمُوۡنَ اَنَّهَا

और जो ईमान वाले हैं वो उस से डरते हैं। और समझते हैं के वो

الۡحَقُّ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيۡنَ يُمَارُوۡنَ فِى السَّاعَةِ

हक़ है। सुनो! यक़ीनन वो जो क़यामत के बारे में झगड़ा कर रहे हैं

لَفِىۡ ضَلٰلٍۢ بَعِيۡدٍ ﴿۱۸﴾ اَللّٰهُ لَطِيۡفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرۡزُقُ

अलबत्ता वो दूर की गुमराही में हैं। अल्लाह अपने बन्दों पर महरबान है, रोज़ी देता है

مَنۡ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الۡقَوِىُّ الۡعَزِيۡزُ ﴿۱۹﴾ مَنۡ كَانَ ع ۴

जिस को चाहता है। और वो क़ूव्वत वाला, ज़बर्दस्त है। जो आख़िरत

يُرِيۡدُ حَرۡثَ الۡاٰخِرَةِ نَزِدۡ لَهٗ فِىۡ حَرۡثِهٖ ۚ وَمَنۡ

की खेती चाहेगा तो हम उस के लिए उस की खेती में ज़्यादती करेंगे। और जो

كَانَ يُرِيۡدُ حَرۡثَ الدُّنۡيَا نُؤۡتِهٖ مِنۡهَا ۙ وَمَا لَهٗ

दुन्या की खेती चाहेगा तो हम उस को उस में से कुछ दे देंगे। और उस के लिए

فِى الۡاٰخِرَةِ مِنۡ نَّصِيۡبٍ ﴿۲۰﴾ اَمۡ لَهُمۡ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوۡا

आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं होगा। क्या उन के लिए शुरका हैं जिन्हों ने उन के

لَهُمۡ مِّنَ الدِّيۡنِ مَا لَمۡ يَاۡذَنۡۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوۡلَا كَلِمَةُ

लिए दीन में कोई शरीअत बनाई है वो जिस का अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया? और अगर क़ौले फैसल

الۡفَصۡلِ لَقُضِىَ بَيۡنَهُمۡ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ لَهُمۡ

न हुवा होता तो उन के दरमियान फैसला कर दिया जाता। और यक़ीनन ज़ालिम लोगों के लिए

عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۲۱﴾ تَرَى الظّٰلِمِيۡنَ مُشۡفِقِيۡنَ

दर्दनाक अज़ाब है। आप ज़ालिम लोगों को देखोगे के डर रहे होंगे

مِمَّا كَسَبُوۡا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمۡ ؕ وَالَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا

अपने करतूत से और वो उन पर पड़ कर रहेगा। और जो ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ فِىۡ رَوۡضٰتِ الۡجَنّٰتِ ۚ لَهُمۡ مَّا يَشَآءُوۡنَ

करते रहे वो जन्नतों के बाग़ात में होंगे। उन के रब के पास उन के लिए वो नेअमतें

عِنۡدَ رَبِّهِمۡ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَضۡلُ الۡكَبِيۡرُ ﴿۲۲﴾ ذٰلِكَ الَّذِىۡ

होंगी जो वो चाहेंगे। ये बड़ा भारी फ़ज़्ल है। उसी की

يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

अल्लाह अपने बन्दों को ख़ुशख़बरी देता है, उन को जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे।

قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِى الْقُرْبٰى ؕ

आप फरमा दीजिए के मैं तुम से उस पर सिवाए रिश्तेदारी की महब्बत के किसी अज्र का सवाल नहीं करता।

وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

और जो नेकी करेगा तो हम उस की नेकी में खूबी ज़्यादा कर देंगे। यक़ीनन अल्लाह

غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿٢٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ

बहोत ज़्यादा बख्शने वाला, क़दरदान है। क्या ये केहते हैं के इस नबी ने अल्लाह पर झूठ घड़ा?

فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ اللّٰهُ

फिर अगर अल्लाह चाहता तो आप के दिल पर मुहर लगा देता। और अल्लाह बातिल को

الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

मिटाते हैं और हक़ को अपने अहकाम से साबित किया करते हैं। यक़ीनन वो दिलों के हाल को

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٤﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ

खूब जानने वाले हैं। और वही अल्लाह अपने बन्दों की तौबा

عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ

क़बूल करता है और गुनाह मुआफ करता है और जानता है वो जो

مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

तुम करते हो। और अल्लाह उन की दुआ क़बूल करता है जो ईमान लाए और नेक काम

الصّٰلِحٰتِ وَ يَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ

करते रहे और उन को अपने फ़ज़्ल से मज़ीद देता है। और काफिरों के

لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ

लिए सख्त अज़ाब होगा। और अगर अल्लाह रोज़ी कुशादा कर दे अपने सब बन्दों के लिए

لَبَغَوْا فِى الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ

तो वो ज़मीन में बाग़ी बन जाएं, लेकिन अल्लाह एक मिक़दार से उतारता है जितनी चाहता है।

اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٧﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يُنَزِّلُ

यक़ीनन वो अपने बन्दों से बाखबर है, देखने वाला है। और वही अल्लाह है जो बारिश

الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَ يَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ

उतारता है इस के बाद के वो मायूस हो जाते हैं और वो अपनी रहमत फैलाता है। और वो

اَلْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٨﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ
क़ाबिले तारीफ कारसाज़ है। और अल्लाह की आयात में से आसमानों और ज़मीन और

وَ الْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ
उन जानदारों का पैदा करना है जो उस ने ज़मीन व आसमान में फैलाए हैं। और वो

عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿٢٩﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ
उन के इकठ्ठा करने पर जब चाहे क़ादिर है। और तुम्हें जो मुसीबत पहोंचे तो वो

مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ يَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٠﴾
तुम्हारे उन आमाल की वजह से है जो तुम्हारे हाथों ने किए और बहोत से गुनाह अल्लाह मुआफ़ कर देते हैं।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا لَكُمْ
और तुम ज़मीन में (भाग कर) अल्लाह को आजिज़ नहीं कर सकते। और तुम्हारे लिए अल्लाह

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٣١﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ
के सिवा कोई कारसाज़ और मददगार नहीं। और अल्लाह की आयात में से समन्दर में चलने वाली

فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ
पहाड़ों जैसी कशतियाँ हैं। अगर अल्लाह चाहे तो हवा को ठेहरा दे, फिर वो (कशतियाँ) समन्दर

رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
की पुश्त पर ठेहरी रेह जाएं। यक़ीनन उस में हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए अलबत्ता

شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ
निशानियाँ हैं। या उन को उन के करतूत की बिना पर हलाक कर दे, और बहोत सों को अल्लाह मुआफ

عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٤﴾ وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا ؕ
कर देते हैं। और अल्लाह जानता है उन को जो झगड़ा करते हैं हमारी आयतों में।

مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ فَمَتَاعُ
उन के लिए कोई छूटने का रास्ता नहीं। सो जो कुछ तुम को दिया दिलाया गया है वो महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी के

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ
बरतने के लिए है। और जो अल्लाह के पास है वो बेहतर है और ज़्यादा बाक़ी रेहने वाला है उन लोगों के लिए

اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ
जो ईमान लाए और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं। और जो गुनाहों में से बड़े गुनाहों से

كَبٰٓئِرَ الۡاِثۡمِ وَالۡفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوۡا هُمۡ يَغۡفِرُوۡنَ ﴿۳۷﴾

और बेहयाई के कामों से बचते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो मुआफ कर देते हैं।

وَالَّذِيۡنَ اسۡتَجَابُوۡا لِرَبِّهِمۡ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمۡرُهُمۡ

और जो अपने रब की बात मान लेते हैं और नमाज़ क़ाइम करते हैं। और उन का काम आपस के

شُوۡرٰى بَيۡنَهُمۡ ۪ وَمِمَّا رَزَقۡنٰهُمۡ يُنۡفِقُوۡنَ ﴿۳۸﴾ وَالَّذِيۡنَ

मशवरे से होता है। और हम ने जो कुछ उन को दिया है वो उस में से खर्च करते हैं। और जो ऐसे हैं

اِذَآ اَصَابَهُمُ الۡبَغۡىُ هُمۡ يَنۡتَصِرُوۡنَ ﴿۳۹﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ

के जब उन पर जुल्म वाकेअ होता है तो वो बराबर का बदला लेते हैं। और एक बुराई का बदला

سَيِّئَةٌ مِّثۡلُهَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَاَصۡلَحَ فَاَجۡرُهٗ

उसी जैसी एक बुराई है। लेकिन जो मुआफ़ कर दे और इस्लाह कर ले तो उस का सवाब

عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۴۰﴾ وَلَمَنِ انۡتَصَرَ بَعۡدَ

अल्लाह के ज़िम्मे है। यक़ीनन अल्लाह ज़ालिमों से महब्बत नहीं करता। और जो अपने ऊपर जुल्म हो चुकने के बाद

ظُلۡمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ سَبِيۡلٍ ﴿۴۱﴾ اِنَّمَا السَّبِيۡلُ

बराबर का बदला ले लें, सो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं है। इलज़ाम तो सिर्फ

عَلَى الَّذِيۡنَ يَظۡلِمُوۡنَ النَّاسَ وَيَبۡغُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ

उन पर है जो इन्सानों पर जुल्म करते हैं और ज़मीन में नाहक़ सरकशी

بِغَيۡرِ الۡحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۴۲﴾ وَلَمَنۡ صَبَرَ

करते हैं। उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। और जो शख्स सब्र करे

وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنۡ عَزۡمِ الۡاُمُوۡرِ ﴿۴۳﴾ وَمَنۡ يُّضۡلِلِ ع ۵

और मुआफ कर दे ये अलबत्ता हिम्मत के कामों में से है। और जिस को अल्लाह गुमराह

اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنۡ وَّلِىٍّ مِّنۡۢ بَعۡدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيۡنَ

कर दे उस के लिए उस के बाद कोई कारसाज़ नहीं। और आप ज़ालिमों को देखोगे

لَمَّا رَاَوُا الۡعَذَابَ يَقُوۡلُوۡنَ هَلۡ اِلٰى مَرَدٍّ

के जब वो अज़ाब को देखेंगे तो कहेंगे के क्या कोई पलटने का

مِّنۡ سَبِيۡلٍ ﴿۴۴﴾ وَتَرٰىهُمۡ يُعۡرَضُوۡنَ عَلَيۡهَا خٰشِعِيۡنَ مِنَ

रास्ता है? और तुम उन को देखोगे के वो दोज़ख पर पेश किए जाएंगे, आजिज़ी कर रहे होंगे ज़िल्लत

الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ

की वजह से, आँखों के किनारों से देख रहे होंगे। और ईमान वाले

اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ

कहेंगे के यक़ीनन खसारे वाले वही लोग हैं जिन्हों ने अपनी जानों और

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ

अपने घर वालों को क़यामत के दिन खसारे में डाला। सुनो! यक़ीनन ज़ालिम लोग

فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ

दाइमी अज़ाब में होंगे। और उन के लिए कोई हिमायती नहीं होंगे

يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

जो अल्लाह के सिवा उन की नुसरत करें। और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे

فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ

उस के लिए कोई रास्ता नहीं। तुम अपने रब की बात मान लो

مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ

इस से पेहले के अल्लाह की तरफ से वो दिन आ जाए जिस को लौटाया नहीं जा सकेगा। तुम्हारे लिए

مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾

उस दिन कोई पनाह लेने की जगह नहीं होगी और तुम्हारे लिए कोई रोकने वाला नहीं होगा।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ

फिर अगर वो ऐराज़ करें तो हम ने आप को उन पर निगराँ बना कर नहीं भेजा। आप के ज़िम्मे तो

اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً

सिर्फ़ पहोंचा देना है। और जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का लुत्फ) चखाते हैं तो वो उस पर

فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ

इतराने लगता हैं। और अगर उन्हें मुसीबत पहोंचती है उन आमाल की वजह से जो उन के हाथों ने आगे भेजे

فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ

तो यक़ीनन इन्सान नाशुकरा बन जाता है। अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की

وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا

सल्तनत है। वो पैदा करता है जो चाहता है। जिसे चाहता है बेटियाँ देता है

وَّيَهَبُ لِمَنۡ يَّشَآءُ الذُّكُوۡرَ ﴿٤٩﴾ اَوۡ يُزَوِّجُهُمۡ ذُكۡرَانًا
और जिसे चाहता है बेटे देता है। या उन के लिए बेटे और बेटियाँ दोनों इकट्ठे कर

وَّ اِنَاثًا ۚ وَيَجۡعَلُ مَنۡ يَّشَآءُ عَقِيۡمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيۡمٌ قَدِيۡرٌ ﴿٥٠﴾
देता है। और जिसे चाहता है बांझ बनाता है। यक़ीनन वो इल्म वाला, क़ुदरत वाला है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنۡ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحۡيًا اَوۡ
और किसी इन्सान की ताक़त नहीं के वो अल्लाह से कलाम करे मगर वही से या

مِنۡ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوۡ يُرۡسِلَ رَسُوۡلًا فَيُوۡحِىَ بِاِذۡنِهٖ
पर्दे के पीछे से या पैग़ाम पहोंचाने वाले (फ़रिशते) को भेजे, फिर वो अल्लाह के हुक्म से वही लाता है

مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِىٌّ حَكِيۡمٌ ﴿٥١﴾ وَكَذٰلِكَ اَوۡحَيۡنَاۤ
जो अल्लाह चाहता है। यक़ीनन वो बरतर है, हिक्मत वाला है। और इसी तरह हम ने आप के पास वही

اِلَيۡكَ رُوۡحًا مِّنۡ اَمۡرِنَا ؕ مَا كُنۡتَ تَدۡرِىۡ مَا الۡكِتٰبُ
यअनी अपना हुक्म भेजा। आप नहीं जानते थे के किताब क्या है

وَلَا الۡاِيۡمَانُ وَلٰكِنۡ جَعَلۡنٰهُ نُوۡرًا نَّهۡدِىۡ بِهٖ مَنۡ
और न ईमान (जानते थे), लेकिन हम ने उस को नूर बनाया, हम उस के ज़रिए हिदायत देते हैं

نَّشَآءُ مِنۡ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهۡدِىۡۤ اِلٰى صِرَاطٍ
जिसे हमारे बन्दों में से चाहते हैं। और यक़ीनन आप सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई

مُّسۡتَقِيۡمٍ ﴿٥٢﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىۡ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
कर रहे हैं। उस अल्लाह के रास्ते की तरफ जिस की मिल्क हैं वो तमाम चीज़ें जो

ثلثه وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ اَلَاۤ اِلَى اللّٰهِ تَصِيۡرُ الۡاُمُوۡرُ ﴿٥٣﴾
आसमानों में और ज़मीन में हैं। सुनो! अल्लाह ही की तरफ तमाम उमूर लौटते हैं।

اٰيَاتُهَا ٨٩ (٤٣) سُوۡرَةُ الزُّخۡرُفِ مَكِّيَّةٌ (٦٣) رُكُوۡعَاتُهَا ٧
उस में ८९ आयतें हैं सूरह ज़ुख़रूफ़ मक्का में नाज़िल हुई और ७ रूकूअ हैं

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ
पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

مع ١١ عند المتقدمين ١٢

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالۡكِتٰبِ الۡمُبِيۡنِ ﴿٢﴾ اِنَّا جَعَلۡنٰهُ قُرۡءٰنًا
हॉ मीम। साफ साफ बयान करने वाली किताब की क़सम! यक़ीनन हम ने उसे अरबी वाला क़ुरआन

عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمۡ تَعۡقِلُوۡنَ ۚ﴿٣﴾ وَاِنَّهٗ فِىۡۤ اُمِّ الۡكِتٰبِ

बनाया है ताके तुम अक़्ल से काम लो। यक़ीनन ये हमारे पास लौहे महफ़ूज़ में है,

لَدَيۡنَا لَعَلِىٌّ حَكِيۡمٌ ؕ﴿٤﴾ اَفَنَضۡرِبُ عَنۡكُمُ الذِّكۡرَ صَفۡحًا

बहोत ही बुलन्द मर्तबा, हिक्मत वाली किताब है। क्या हम तुम से इस ज़िक्र (कुरआन) को हटा देंगे

اَنۡ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا مُّسۡرِفِيۡنَ ﴿٥﴾ وَكَمۡ اَرۡسَلۡنَا مِنۡ نَّبِىٍّ

इस वजह से के तुम हद से आगे बढ़ने वाली क़ौम हो? और हम ने पेहले लोगों में बहोत से

فِى الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٦﴾ وَمَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ نَّبِىٍّ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ

नबी भेजे। और कोई नबी उन के पास नहीं आता था मगर वो उस के साथ मज़ाक़

يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٧﴾ فَاَهۡلَكۡنَاۤ اَشَدَّ مِنۡهُمۡ بَطۡشًا وَّمَضٰى

करते थे। फिर हम ने हलाक कर दिया उन से भी मज़बूत पकड़ वालों को, और पेहले लोगों

مَثَلُ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٨﴾ وَلَئِنۡ سَاَلۡتَهُمۡ مَّنۡ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

का हाल पीछे गुज़र चुका है। और अगर आप उन से पूछें के किस ने आसमानों और ज़मीन को

وَالۡاَرۡضَ لَيَقُوۡلُنَّ خَلَقَهُنَّ الۡعَزِيۡزُ الۡعَلِيۡمُ ۙ﴿٩﴾ الَّذِىۡ

पैदा किया, तो वो ज़रूर कहेंगे के उन को पैदा किया उस अल्लाह ने जो ज़बर्दस्त है, इल्म वाला है। वो अल्लाह

جَعَلَ لَكُمُ الۡاَرۡضَ مَهۡدًا وَّجَعَلَ لَكُمۡ فِيۡهَا سُبُلًا

जिस ने ज़मीन को फ़र्श बनाया और जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन में रास्ते बनाए

لَّعَلَّكُمۡ تَهۡتَدُوۡنَ ۙ﴿١٠﴾ وَالَّذِىۡ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ

ताके तुम राह पाओ। और वो जिस ने आसमान से एक मिक़्दार से पानी

بِقَدَرٍ ۚ فَاَنۡشَرۡنَا بِهٖ بَلۡدَةً مَّيۡتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخۡرَجُوۡنَ ﴿١١﴾

उतारा। फिर हम उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करते हैं। इसी तरह तुम भी क़ब्रों से निकाले जाओगे।

وَالَّذِىۡ خَلَقَ الۡاَزۡوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمۡ

और वही है अल्लाह जिस ने तमाम जोड़े पैदा किए और जिस ने तुम्हारे लिए कशतियों में

مِّنَ الۡفُلۡكِ وَالۡاَنۡعَامِ مَا تَرۡكَبُوۡنَ ۙ﴿١٢﴾ لِتَسۡتَوٗا عَلٰى ظُهُوۡرِهٖ

और चौपाओं में से वो बनाए जिन पर तुम सवारी करते हो। ताके तुम उन की पीठों पर बराबर सवार हो जाओ,

ثُمَّ تَذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ رَبِّكُمۡ اِذَا اسۡتَوَيۡتُمۡ عَلَيۡهِ وَ

फिर तुम अपने रब की नेअमत को याद करो जब तुम उस पर बराबर बैठ जाओ और

تَقُوۡلُوۡا سُبۡحٰنَ الَّذِیۡ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا کُنَّا لَهٗ
कहो वो अल्लाह पाक है जिस ने हमारे लिए इस को ताबेअ किया और हम उस को क़ाबू में कर नहीं

مُقۡرِنِیۡنَ ﴿۱۳﴾ وَاِنَّاۤ اِلٰی رَبِّنَا لَمُنۡقَلِبُوۡنَ ﴿۱۴﴾ وَجَعَلُوۡا لَهٗ
सकते थे। और यक़ीनन हम अपने रब की तरफ लौट कर जाने वाले हैं। और उन्हों ने अल्लाह के लिए

مِنۡ عِبَادِهٖ جُزۡءًا ؕ اِنَّ الۡاِنۡسَانَ لَکَفُوۡرٌ مُّبِیۡنٌ ﴿۱۵﴾ؕ ع
उस के बन्दों में से जुज़्अ (औलाद) क़रार दिए। यक़ीनन इन्सान अलबत्ता खुला नाशुकरा है।

اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا یَخۡلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصۡفٰکُمۡ بِالۡبَنِیۡنَ ﴿۱۶﴾
क्या उस ने (खुद) अपनी मखलूक़ में से बेटियाँ लीं और तुम्हें बेटे मुन्तखब कर के दिए?

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحۡمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ
हालांके जब उन में से किसी एक को बशारत दी जाती है उस की जिस के साथ वो रहमान के लिए मिसाल बयान करता है (लड़की),

وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّهُوَ کَظِیۡمٌ ﴿۱۷﴾ اَوَمَنۡ یُّنَشَّؤُا
तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है और वो दिल में घुटने लगता है। क्या वो बच्ची जो परवरिश पाती है

فِی الۡحِلۡیَةِ وَهُوَ فِی الۡخِصَامِ غَیۡرُ مُبِیۡنٍ ﴿۱۸﴾ وَ جَعَلُوا
ज़ेवर में और आपस के झगड़े में वो साफ बोल नहीं सकती। और उन्हों ने उन

الۡمَلٰٓئِکَةَ الَّذِیۡنَ هُمۡ عِبٰدُ الرَّحۡمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوۡا
फ़रिशतों को जो रहमान के बन्दे हैं औरतें बना दिया। क्या वो उन की पैदाइश के वक्त

خَلۡقَهُمۡ ؕ سَتُکۡتَبُ شَهَادَتُهُمۡ وَ یُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿۱۹﴾ وَقَالُوۡا
मौजूद थे? अनक़रीब उन की शहादत लिखी जाएगी और उन से सवाल किया जाएगा। और ये केहते हैं

لَوۡ شَآءَ الرَّحۡمٰنُ مَا عَبَدۡنٰهُمۡ ؕ مَا لَهُمۡ بِذٰلِكَ مِنۡ عِلۡمٍ ٭
के अगर रहमान चाहता तो हम उन की इबादत न करते। उन की उस पर कोई दलील नहीं।

اِنۡ هُمۡ اِلَّا یَخۡرُصُوۡنَ ﴿۲۰﴾ؕ اَمۡ اٰتَیۡنٰهُمۡ کِتٰبًا مِّنۡ قَبۡلِهٖ
वो तो सिर्फ़ अटकल से बातें कर रहे हैं। क्या हम ने उन को किताब दी इस से पेहले,

فَهُمۡ بِهٖ مُسۡتَمۡسِکُوۡنَ ﴿۲۱﴾ بَلۡ قَالُوۡۤا اِنَّا وَجَدۡنَاۤ اٰبَآءَنَا
फिर वो उस को मज़बूती से पकड़े हुए हैं? बल्के उन्हों ने कहा के यक़ीनन हम ने हमारे बाप दादा

عَلٰۤی اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰۤی اٰثٰرِهِمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿۲۲﴾ وَکَذٰلِكَ مَاۤ
को पाया एक तरीक़े पर और हम उन्ही के निशानाते क़दम पर राह पा रहे हैं। और इसी तरह हम

اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ
ने आप से पेहले किसी बस्ती में कोई डराने वाला नहीं भेजा, मगर वहाँ के खुशहाल

مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا
लोगों ने कहा के यक़ीनन हम ने हमारे बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया और हम उन के निशानाते क़दम

عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾ قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى
की पैरवी कर रहे हैं। नबी ने कहा क्या अगर्चे मैं तुम्हारे पास इस से ज़्यादा हिदायत वाली चीज़ ले कर

مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ۭ قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
आया हूँ जिस पर तुम ने तुम्हारे बाप दादा को पाया? उन्हों ने कहा के हम यक़ीनन उस के साथ कुफ्र करते हैं जिस को

كٰفِرُوْنَ ﴿٢٤﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ
दे कर तुम भेजे गए हो। फिर हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया, तो आप देखिए के झुठलाने वालों का

عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٥﴾ ۧ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ النصف ع ٢ ٨
अन्जाम कैसा हुवा? और जब के इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया अपने बाप से

وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿٢٦﴾ ۙ اِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ
और अपनी क़ौम से के मैं बरी हूँ उन चीज़ों से जिन की तुम इबादत करते हो। मगर वो अल्लाह जिस ने मुझे पैदा किया,

فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿٢٧﴾ وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً
यक़ीनन वही अनक़रीब मुझे रास्ता दिखाएगा। और उस को अल्लाह ने बाक़ी रेहने वाला कलिमा बनाया

فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾ بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ
उन की ज़ुर्रीयत में ताके वो रूजूअ करें। बल्के मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को

وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٩﴾
मुतमत्तेअ किया यहाँ तक के उन के पास हक़ आया और साफ साफ बयान करने वाला पैग़म्बर आया।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٠﴾
और जब उन के पास हक़ आया तो उन्हों ने कहा के ये जादू है और हम उस के साथ कुफ्र करते हैं।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ
और उन्हों ने कहा के ये कुरआन उन दो बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर

مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿٣١﴾ اَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۭ
क्यूं नहीं उतारा गया? क्या ये तेरे रब की रहमत तक़सीम करते हैं?

نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुन्यवी ज़िन्दगी में तक़सीम की है,

وَ رَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ

और हम ने उन में से एक को दूसरे पर दरजात के ऐतेबार से बुलन्द किया है ताके एक

بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾

दूसरे से काम लेता रहे। और तेरे रब की रहमत बेहतर है उस से जिसे ये जमा कर रहे हैं।

وَلَوْلَآ اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ

और अगर ये बात न होती के तमाम इन्सान एक ही तरह के बन जाएंगे तो रहमान के साथ जो

بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا

कुफ्र करते हैं हम उन के घर की छतें चाँदी की और सीढ़ियाँ चाँदी की बना देते, जिन पर

يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَيْهَا

वो चढ़ते हैं। और उन के घरों के दरवाज़े और तख्त जिन पर

يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ زُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ

वो टेक लगाते हैं चाँदी के बना देते। और (ये सब चीज़ें) सौने की बना देते। और ये तमाम तो सिर्फ दुन्यवी ज़िन्दगी का

ع الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾ وَمَنْ

थोड़ा नफा उठाने की चीज़ें हैं। और आखिरत तेरे रब के नज़दीक मुत्तक़ियों के लिए बेहतर है। और जो

يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ

रहमान के ज़िक्र से अन्धा बनता है तो हम उस के लिए एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं, फिर वो उस का

قَرِيْنٌ ﴿۳۶﴾ وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ

साथी बन जाता है। और ये उन्हें रास्ते से रोकते हैं और ये लोग समझते

اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۳۷﴾ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ

हैं के हम हिदायत पर हैं। यहाँ तक के जब वो हमारे पास आएगा तो कहेगा काश के मेरे

وَ بَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿۳۸﴾

और तेरे दरमियान मशरिक़ व मग़रिब की दूरी होती, तू कितना बुरा साथी है!

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ

और आज तुम्हें हरगिज़ नफ़ा नहीं देगी जब तुम ने शिर्क किया ये बात के तुम अज़ाब में

مُشۡرِكُوۡنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنۡتَ تُسۡمِعُ الصُّمَّ اَوۡ تَهۡدِی الۡعُمۡیَ
शरीक हो। क्या आप बेहरे को सुना सकते हो या अन्धे को रास्ता दिखा सकते हो

وَمَنۡ كَانَ فِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذۡهَبَنَّ بِكَ
और उस शख़्स को जो खुली गुमराही में है? फिर अगर हम आप को (दुन्या से) ले जाएं

فَاِنَّا مِنۡهُمۡ مُّنۡتَقِمُوۡنَ ﴿٤١﴾ اَوۡ نُرِیَنَّكَ الَّذِیۡ وَعَدۡنٰهُمۡ
फिर भी हम उन से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। या हम आप को दिखा दें वो जिस का हम ने उन से वादा किया है,

فَاِنَّا عَلَیۡهِمۡ مُّقۡتَدِرُوۡنَ ﴿٤٢﴾ فَاسۡتَمۡسِكۡ بِالَّذِیۡۤ اُوۡحِیَ
तो हमें उन पर कुदरत है। फिर आप मज़बूत थामे रहिए उस को जो आप की तरफ वही

اِلَیۡكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسۡتَقِیۡمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكۡرٌ لَّكَ
किया गया। यक़ीनन आप सीधे रास्ते पर हैं। और ये आप के लिए और आप की क़ौम

وَ لِقَوۡمِكَ ۚ وَسَوۡفَ تُسۡـَٔلُوۡنَ ﴿٤٤﴾ وَسۡـَٔلۡ مَنۡ اَرۡسَلۡنَا
के लिए नसीहत है। और आगे तुम से सवाल किया जाएगा। और आप हमारे पैग़म्बरों से पूछ लीजिए

مِنۡ قَبۡلِكَ مِنۡ رُّسُلِنَاۤ ۟ اَجَعَلۡنَا مِنۡ دُوۡنِ الرَّحۡمٰنِ
जिन को हम ने आप से पेहले भेजा। क्या हम ने रहमान के सिवा माबूद बनाए हैं

اٰلِهَةً یُّعۡبَدُوۡنَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدۡ اَرۡسَلۡنَا مُوۡسٰی بِاٰیٰتِنَاۤ ع
जिन की इबादत की जाए? यक़ीनन हम ने मूसा (अलैहिस्सलाम) को हमारे मोअजिज़ात दे कर भेजा फिरऔन

اِلٰی فِرۡعَوۡنَ وَمَلَا۠ئِهٖ فَقَالَ اِنِّیۡ رَسُوۡلُ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿٤٦﴾
और उस के सरदारों की जानिब तो मूसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के में रब्बुल आलमीन का भेजा हुवा पैग़म्बर हूँ।

فَلَمَّا جَآءَهُمۡ بِاٰیٰتِنَاۤ اِذَا هُمۡ مِّنۡهَا یَضۡحَكُوۡنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِیۡهِمۡ
फिर जब वो उन के पास हमारे मोअजिज़ात ले कर आए तो वो उस से हंसने लगे। और हम उन्हें कोई मोअजिज़ा

مِّنۡ اٰیَةٍ اِلَّا هِیَ اَكۡبَرُ مِنۡ اُخۡتِهَا ۫ وَاَخَذۡنٰهُمۡ بِالۡعَذَابِ
नहीं दिखाते थे मगर वो उन के साथ वाले मोअजिज़े से बड़ा होता था। और हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ लिया

لَعَلَّهُمۡ یَرۡجِعُوۡنَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوۡا یٰۤاَیُّهَ السّٰحِرُ ادۡعُ لَنَا رَبَّكَ
ताके वो रूजूअ करें। और उन्हों ने कहा के ऐ जादूगर! तू हमारे लिए अपने रब से दुआ कर

بِمَا عَهِدَ عِنۡدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهۡتَدُوۡنَ ﴿٤٩﴾ فَلَمَّا كَشَفۡنَا
उस का वास्ता दे कर जो अहद उस ने तुझ से कर रखा है। हम हिदायत क़बूल कर लेंगे। फिर जब हम

عَنۡهُمُ الۡعَذَابَ اِذَا هُمۡ يَنۡكُثُوۡنَ ﴿۵۰﴾ وَنَادٰى فِرۡعَوۡنُ

उन से वो अज़ाब हटा देते तो उस वक़्त वो अहदशिकनी करने लगते। और फिरऔन ने अपनी क़ौम

فِىۡ قَوۡمِهٖ قَالَ يٰقَوۡمِ اَلَيۡسَ لِىۡ مُلۡكُ مِصۡرَ وَ هٰذِهِ

में आवाज़ लगाई, उस ने कहा के ऐ मेरी क़ौम! क्या मेरे लिए मिस्र की सल्तनत

الۡاَنۡهٰرُ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِىۡ ۚ اَفَلَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۵۱﴾ اَمۡ اَنَا

और ये नेहरें नहीं हैं जो मेरे नीचे से बेहती हैं? क्या फिर तुम देखते नहीं हो? बल्के मैं

خَيۡرٌ مِّنۡ هٰذَا الَّذِىۡ هُوَ مَهِيۡنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيۡنُ ﴿۵۲﴾

बेहतर हूँ उस शख़्स से जो ज़लील है और साफ बोल भी नहीं सकता?

فَلَوۡلَاۤ اُلۡقِىَ عَلَيۡهِ اَسۡوِرَةٌ مِّنۡ ذَهَبٍ اَوۡ جَآءَ مَعَهُ

फिर उस पर सौने के कंगन क्यूं नहीं डाले गए या उस के साथ फरिशते सफ बांध कर

الۡمَلٰٓئِكَةُ مُقۡتَرِنِيۡنَ ﴿۵۳﴾ فَاسۡتَخَفَّ قَوۡمَهٗ فَاَطَاعُوۡهُ ؕ

क्यूं नहीं आए? गर्ज़ उस ने अपनी क़ौम को मग़लूब कर दिया, फिर भी उन्हों ने उस की इताअत कर ली।

اِنَّهُمۡ كَانُوۡا قَوۡمًا فٰسِقِيۡنَ ﴿۵۴﴾ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوۡنَا انۡتَقَمۡنَا

इस लिए के वो नाफरमान क़ौम थी। फिर जब उन्हों ने हमें ग़ुस्सा दिलाया तो हम ने उन से

مِنۡهُمۡ فَاَغۡرَقۡنٰهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۵۵﴾ فَجَعَلۡنٰهُمۡ سَلَفًا وَّمَثَلًا

इन्तिक़ाम लिया, फिर हम ने उन तमाम को ग़र्क़ कर दिया। फिर हम ने उन को गुज़श्ता क़ौम और पीछे वालों के लिए

لِّلۡاٰخِرِيۡنَ ﴿۵۶﴾ وَلَمَّا ضُرِبَ ابۡنُ مَرۡيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوۡمُكَ ع ۱۵

इबरत बना दिया। और जब ईसा इब्ने मरयम (अलैहिमस्सलाम) की मिसाल बयान की गई, तो अचानक आप की क़ौम

مِنۡهُ يَصِدُّوۡنَ ﴿۵۷﴾ وَقَالُوۡۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيۡرٌ اَمۡ هُوَ ؕ

उस से शोर मचाने लगी। और वो बोले के क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या ईसा?

مَا ضَرَبُوۡهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلۡ هُمۡ قَوۡمٌ خَصِمُوۡنَ ﴿۵۸﴾

वो आप के सामने सिर्फ झगड़े के लिए ये मिसाल बयान करते हैं। बल्के वो झगड़ालू क़ौम ही है।

اِنۡ هُوَ اِلَّا عَبۡدٌ اَنۡعَمۡنَا عَلَيۡهِ وَ جَعَلۡنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىۡۤ

ईसा (अलैहिस्सलाम) तो एक बन्दा है, जिस पर हम ने इन्आम किया और जिस को हम ने बनी इस्राईल के

اِسۡرَآءِيۡلَ ﴿۵۹﴾ وَلَوۡ نَشَآءُ لَجَعَلۡنَا مِنۡكُمۡ مَّلٰٓئِكَةً فِى

लिए मिसाल बनाया। और अगर हम चाहते तो हम तुम में से फरिशते बनाते के

الۡاَرۡضِ يَخۡلُفُوۡنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلۡمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمۡتَرُنَّ

वो ज़मीन पर यके बाद दीगरे रहा करते। और यक़ीनन ईसा इब्ने मरयम (अलैहस्सलाम) ये क़यामत की निशानी हैं, इस लिए

بِهَا وَاتَّبِعُوۡنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦١﴾ وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ

तुम लोग क़यामत के बारे में शक न करो और तुम मेरे हुक्म पर चलो। ये सीधा रास्ता है। और तुम्हें शैतान न

الشَّيۡطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمۡ عَدُوٌّ مُّبِيۡنٌ ﴿٦٢﴾ وَ لَمَّا جَآءَ عِيۡسٰى

रोके, यक़ीनन वो तुम्हारा खुला दुशमन है। और जब ईसा (अलैहिस्सलाम) रोशन मोअजिज़ात ले कर आए

بِالۡبَيِّنٰتِ قَالَ قَدۡ جِئۡتُكُمۡ بِالۡحِكۡمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمۡ

तो ईसा (अलैहिस्सलाम) ने फरमाया के यक़ीनन मैं तुम्हारे पास हिक्मत ले कर आया हूँ और ताके मैं तुम्हारे सामने

بَعۡضَ الَّذِىۡ تَخۡتَلِفُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿٦٣﴾

साफ बयान करूँ उस का कुछ हिस्सा जिस में तुम इखतिलाफ़ कर रहे हो। तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىۡ وَرَبُّكُمۡ فَاعۡبُدُوۡهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ

यक़ीनन अल्लाह वही मेरा और तुम्हारा रब है, तो तुम उसी की इबादत करो। ये सीधा

مُّسۡتَقِيۡمٌ ﴿٦٤﴾ فَاخۡتَلَفَ الۡاَحۡزَابُ مِنۡۢ بَيۡنِهِمۡ ۚ

रास्ता है। तो उन में से गिरोह अलग अलग हो गए।

فَوَيۡلٌ لِّلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا مِنۡ عَذَابِ يَوۡمٍ اَلِيۡمٍ ﴿٦٥﴾ هَلۡ

फिर ज़ालिमों के लिए दर्दनाक दिन के अज़ाब से हलाकत है। वो

يَنۡظُرُوۡنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنۡ تَاۡتِيَهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ

मुन्तज़िर नहीं हैं मगर क़यामत के के एक दम उन के पास आ जाए और उन्हें

لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿٦٦﴾ اَلۡاَخِلَّآءُ يَوۡمَئِذٍۢ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ عَدُوٌّ

पता भी न हो। सिवाए मुत्तक़ियों के उस दिन दोस्त एक दूसरे के दुशमन

اِلَّا الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوۡفٌ عَلَيۡكُمُ الۡيَوۡمَ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ ع ٤

होंगे। ऐ मेरे बन्दो! आज तुम पर कोई खौफ नहीं है और न तुम

تَحۡزَنُوۡنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوۡا مُسۡلِمِيۡنَ ﴿٦٩﴾

ग़मगीन होंगे। वो जो ईमान लाए हमारी आयतों पर और जो मुसलमान थे।

اُدۡخُلُوا الۡجَنَّةَ اَنۡتُمۡ وَ اَزۡوَاجُكُمۡ تُحۡبَرُوۡنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ

(कहा जाएगा) तुम और तुम्हारी बीवियाँ शादां व फरहां जन्नत में दाख़िल हो जाओ। उन पर

عَلَيۡهِمۡ بِصِحَافٍ مِّنۡ ذَهَبٍ وَّاَكۡوَابٍ ۚ وَفِيۡهَا

सौने के लगन और प्यालों का दौर चलेगा। और उस में

مَا تَشۡتَهِيۡهِ الۡاَنۡفُسُ وَتَلَذُّ الۡاَعۡيُنُ ۚ وَاَنۡتُمۡ فِيۡهَا

वो चीज़ें होंगी जिस की नफ्स ख्वाहिश करेंगे और जिस से आँखें लज्ज़त पाएंगी। और तुम उस में

خٰلِدُوۡنَ ۚ﴿۷۱﴾ وَتِلۡكَ الۡجَنَّةُ الَّتِىۡۤ اُوۡرِثۡتُمُوۡهَا بِمَا كُنۡتُمۡ

हमेशा रहोगे। और ये वो जन्नत है जिस का तुम्हें अपने अमल की बदौलत वारिस बनाया

تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۷۲﴾ لَـكُمۡ فِيۡهَا فَاكِهَةٌ كَثِيۡرَةٌ مِّنۡهَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿۷۳﴾

गया है। तुम्हारे लिए यहाँ बकस्रत मेवे हैं, जिन में से तुम खाओ।

اِنَّ الۡمُجۡرِمِيۡنَ فِىۡ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوۡنَ ۖ﴿۷۴﴾

यक़ीनन मुजरिम लोग जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे।

لَا يُفَتَّرُ عَنۡهُمۡ وَهُمۡ فِيۡهِ مُبۡلِسُوۡنَ ۚ﴿۷۵﴾ وَمَا ظَلَمۡنٰهُمۡ

वो उन से हल्का नहीं किया जाएगा और वो उस में मायूस पड़े रहेंगे। और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया

وَلٰكِنۡ كَانُوۡا هُمُ الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۷۶﴾ وَنَادَوۡا يٰمٰلِكُ لِيَقۡضِ

लेकिन वो खुद ही ज़ालिम थे। और वो पुकारेंगे ऐ मालिक! तेरे रब को

عَلَيۡنَا رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمۡ مّٰكِثُوۡنَ ﴿۷۷﴾ لَقَدۡ جِئۡنٰكُمۡ

हमारा ख़ातमा कर देना चाहिए। मालिक कहेंगे के तुम्हें ठेहेरना ही है। हम तुम्हारे पास हक़ को

بِالۡحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَكُمۡ لِلۡحَقِّ كٰرِهُوۡنَ ﴿۷۸﴾ اَمۡ اَبۡرَمُوۡۤا

लाए थे, लेकिन तुम में से अक्सर हक़ को नापसन्द करते थे। क्या उन्हों ने हत्मी

اَمۡرًا فَاِنَّا مُبۡرِمُوۡنَ ۚ﴿۷۹﴾ اَمۡ يَحۡسَبُوۡنَ اَنَّا لَا نَسۡمَعُ سِرَّهُمۡ

फ़ैसला कर लिया है? तो हम भी हत्मी फैसला करने वाले हैं। या वो समझते हैं के हम उन की चुपके से कही हुई बात

وَ نَجۡوٰىهُمۡ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيۡهِمۡ يَكۡتُبُوۡنَ ﴿۸۰﴾ قُلۡ

या उन की सरगोशी सुनते नहीं? क्यूं नहीं! और हमारे भेजे हुए फ़रिशते उन के पास लिख रहे हैं।

اِنۡ كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الۡعٰبِدِيۡنَ ﴿۸۱﴾ سُبۡحٰنَ

आप फ़रमा दीजिए के अगर रहमान की औलाद होती, तो सब से पेहले मैं उस की बन्दगी करने वाला होता। आसमानों

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ رَبِّ الۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ﴿۸۲﴾

और ज़मीन का रब, अर्श का रब पाक है उन बातों से जो वो बयान करते हैं।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَ يَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ

पस आप उन को छोड़ दीजिए के वो लगे रहें और खेलते रहें यहाँ तक के वो पा लें उन का वो दिन

الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿۸۳﴾ وَهُوَ الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ

जिस से उन्हें डराया जा रहा है। और वही अल्लाह आसमान में भी माबूद है

وَّفِى الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ﴿۸۴﴾ وَتَبٰرَكَ

और ज़मीन में भी माबूद है। और वो हिक्मत वाला, इल्म वाला है। और बाबरकत है

الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ

वो अल्लाह जिस के लिए आसमानों और ज़मीन और उन दोनों के दरमियान की तमाम चीज़ों की सल्तनत है।

وَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۸۵﴾

और उसी के पास क़यामत का इल्म है। और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ

और वो लोग जिन को ये अल्लाह के सिवा पुकारते हैं सिफारिश के मालिक नहीं हैं,

اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۶﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ

मगर जिस ने हक़ की गवाही दी और वो जानते हैं। और अगर आप उन से पूछें

مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿۸۷﴾

किस ने उन को पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे के अल्लाह ने। सो ये लोग किधर उल्टे चले जाते हैं?

وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۸﴾ وقف لازم

और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिकायत के इलाही! ये तो ऐसी क़ौम है जो ईमान नहीं लाती।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿۸۹﴾ ع ٣

(कहा गया) फिर आप उन से दरगुज़र कीजिए और यूं कहिए 'अस्सलामु अलैकुम'। फिर आगे उन्हें पता चलेगा।

سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ (٤٤)

اٰيَاتُهَا ٥٩ (٤٤) سُوْرَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ (٦٤) رُكُوْعَاتُهَا ٣

और ३ रूकूअ हैं सूरह दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई उस में ५९ आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿۱﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿۲﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةٍ

हॉ मीम। साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब की क़सम! हम ने उस को बरकत वाली रात में

مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ۝۳ فِيْهَا يُفْرَقُ

उतारा है, बेशक हम डराने वाले हैं। जिस रात में तमाम

كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ۝۴ اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا

हिक्मत भरे अवामिर फ़ैसल हो कर हमारी तरफ़ से तक़सीम किए जाते हैं। यक़ीनन हम ही

مُرْسِلِيْنَ ۝۵ رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

भेजने वाले हैं। तेरे रब की रहमत के बाइस। यक़ीनन वो सुनने वाला,

وقف لازم الْعَلِيْمُ ۝۶ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ

इल्म वाला है। वो आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान का रब है

اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝۷ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ

अगर तुम यक़ीन रखते हो। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता है और मौत देता है।

رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝۸ بَلْ هُمْ

वो तुम्हारा और तुम्हारे पेहले बाप दादाओं का रब है। बल्के वो

فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ۝۹ فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ

शक में हैं, खेल रहे हैं। इस लिए आप उस दिन का इन्तिज़ार कीजिए जिस दिन आसमान

بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۝۱۰ يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ

साफ धुएं को लाएगा। जो इन्सानों पर छा जाएगा। ये दर्दनाक

اَلِيْمٌ ۝۱۱ رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ۝۱۲

अज़ाब है। ऐ हमारे रब! तू हम से ये अज़ाब दूर कर दे, यक़ीनन हम ईमान ला रहे हैं।

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۝۱۳

अब उन के लिए इस नसीहत के हासिल करने का वक़्त कहाँ होगा, हालांके उन के पास साफ साफ बयान करने वाला पैग़म्बर

وقف لازم ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۝۱۴ اِنَّا

आया। फिर उन्हों ने उस से ऐराज़ किया और कहा के ये तो सिखलाया हुवा है, मजनून है। हम

وقف لازم كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ۝۱۵

अज़ाब थोड़ा सा कम करेंगे तो तुम दोबारा उसी हालत पर लौट जाओगे।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ۝۱۶

जिस दिन हमारी सख़्ती वाली पकड़ होगी, हम ज़रूर इन्तिक़ाम लेने वाले हैं।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ

हम ने उन से पेहले फ़िरऔन की क़ौम को आज़माया और उन के पास मुअज़्ज़ज़

كَرِيْمٌ ﴿۱۷﴾ اَنْ اَدُّوْۤا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ

रसूल आया। के अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो। मैं तुम्हारे लिए

رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۸﴾ وَّ اَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّيْۤ

अमानतदार रसूल हूँ। और ये के अल्लाह पर सरकशी मत करो। मैं

اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹﴾ وَ اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ

तुम्हारे पास रोशन मोअजिज़ा ले कर आया हूँ। और मैं मेरे और तुम्हारे रब की

وَ رَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿۲۰﴾ وَ اِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ

पनाह लेता हूँ इस से के तुम मुझे रज्म करो। और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते

فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿۲۱﴾ فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ

तो तुम मुझ से दूर रहो। फिर उन्हों ने अपने रब से दुआ की के ये ऐसी क़ौम है

مُّجْرِمُوْنَ ﴿۲۲﴾ الثالثة فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۲۳﴾ الثالثة

जो मुजरिम है। तो (ऐ मूसा!) आप मेरे बन्दों को रात के वक़्त ले कर निकल जाइए, तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

وَ اتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۴﴾

और आप समन्दर को ठेहरा हुवा छोड़ दीजिए। इस लिए के ये ऐसा लशकर है जिसे ग़र्क़ किया जाएगा।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍ ﴿۲۵﴾ وَّ زُرُوْعٍ

वो कितने बाग़ात और चशमे और खेतियाँ और अच्छी रेहने की जगहें

وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿۲۶﴾ وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ﴿۲۷﴾

छोड़ कर गए। और ऐसी नेअमतें छोड़ीं जिन में वो मज़े कर रहे थे।

كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۲۸﴾

इसी तरह। और हम ने दूसरी क़ौम को उन चीज़ों का वारिस बनाया।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا

फिर उन पर न आसमान रोया और न ज़मीन रोई और न उन्हें

مُنْظَرِيْنَ ﴿۲۹﴾ وَ لَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنَ ع

मुहलत दी गई। हम ने बनी इस्राईल को रूस्वा करने वाले अज़ाब से

الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ۙ﴿٣٠﴾ مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ

नजात दी। (जो था) फ़िरऔन से, वो सरकश, हद से

عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ

आगे बढ़ने वालों में से था। हम ने उन को इल्म के साथ तमाम

عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۚ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ

जहान वालों पर मुन्तख़ब किया। और हम ने उन (बनी इस्राईल) को वो मोअजिज़ात दिए

مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۙ﴿٣٤﴾

जिन में सरीह आज़्माइश/इन्आम था। यक़ीनन ये लोग केहते हैं।

اِنْ هِيَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ ﴿٣٥﴾

ये हमारा पेहली दफ़ा ही मरना है, और हम क़ब्रों से उठाए नहीं जाएंगे।

فَاْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمْ

फिर हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। क्या ये

خَيْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ

बेहतर हैं या क़ौमे तुब्बअ और वो जो उन से पेहले थे?

اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿٣٧﴾

जिन को हम ने हलाक किया। यक़ीनन वो भी मुजरिम थे।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ ﴿٣٨﴾

और हम ने आसमानों और ज़मीन और उन के दरमियान की चीज़ों को खेल के लिए पैदा नहीं किया।

مَا خَلَقْنٰهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

हम ने उन को पैदा नहीं किया मगर हक़ के साथ लेकिन उन में से अक्सर

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۙ﴿٤٠﴾

जानते नहीं। बेशक फ़ैसले का दिन उन तमाम का मुक़र्ररा वक़्त है।

يَوْمَ لَا يُغْنِىْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْـًٔا وَّلَا هُمْ

जिस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम नहीं आएगा और न उन की

يُنْصَرُوْنَ ۙ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ

नुसरत की जाएगी। मगर वो जिस पर अल्लाह रहम करे। यक़ीनन वो

الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٤٢﴾ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ

ज़बर्दस्त है, निहायत रहम वाला है। यक़ीनन ज़क्कूम का दरख्त, वो गुनेहगार

الْاَثِيْمِ ﴿٤٤﴾ كَالْمُهْلِ ۚ يَغْلِىْ فِى الْبُطُوْنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلْيِ

का खाना है। जो तेल की तलछट जैसा होगा, (उन के) पेट में गर्म पानी के खौलने की तरह

الْحَمِيْمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ اِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٤٧﴾

खौलेगा। (हुक्म होगा) इस को पकड़ो और इस को धकेल कर दोज़ख के बीच में ले जाओ।

ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَاْسِهٖ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ﴿٤٨﴾

फिर उस के सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब उंडेल दो।

ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾

तू इस अज़ाब को चख। तू बड़ा इज्ज़त वाला और मुकर्रम बनता था।

اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ

ये वो अज़ाब है जिस में तुम शक कर रहे थे। मुत्तक़ी लोग

فِىْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِىْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

अमन वाली जगह में होंगे। बाग़ात में और चशमों में होंगे।

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾

वो बारीक और मोटा रेशम पेहने हुए होंगे, आमने सामने बैठे होंगे।

كَذٰلِكَ ۖ وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُوْنَ

इसी तरह। और बड़ी आँखों वाली हूरें उन के निकाह में हम देंगे। वो

فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

उन में बेखौफ हो कर तमाम मेवे मांगेंगे। वो सिवाए

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ

पेहली मौत के उस में मौत को नहीं चखेंगे। और अल्लाह ने

عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۗ ذٰلِكَ

उन्हें दोज़ख के अज़ाब से बचा लिया। ये सब कुछ आप के रब के फ़ज़्ल से होगा। यही

هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ

भारी कामयाबी है। सो हम ने इस कुरआन को आप की ज़बान में आसान कर दिया

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

ताके वो नसीहत हासिल करें। इस लिए आप मुन्तज़िर रहिए, यक़ीनन वो भी मुन्तज़िर हैं।

ايَاتُهَا ٣٧ (٤٥) سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ (٦٥) رُكُوْعَاتُهَا ٤

उस में ३७ आयतें हैं सूरह जासिया मक्का में नाज़िल हुई और ४ रूकूअ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

पढ़ता हूँ अल्लाह का नाम ले कर जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾

हॉ मीम। इस किताब का उतारा जाना ज़बर्दस्त, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से है।

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

यक़ीनन आसमानों और ज़मीन में अलबत्ता ईमान लाने वालों के लिए निशानियाँ हैं।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ

और तुम्हारे पैदा करने में और उन जानवरों में भी जिन को अल्लाह फैलाता है निशानियाँ हैं

لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

ऐसी क़ौम के लिए जो यक़ीन रखती है। और रात और दिन के आने जाने में

وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا

और उस रोज़ी में जो अल्लाह ने आसमान से उतारी, फिर उस

بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ تَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ

के ज़रिए ज़मीन को उस के खुश्क हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, और हवाओं के चलाने में

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम के लिए जो अक़्ल रखती है। ये अल्लाह की आयतें हैं, जिन्हें हम आप

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ

के सामने हक़ के साथ तिलावत करते हैं। फिर अल्लाह के बाद और अल्लाह की आयतों के बाद कौन सी बात पर

وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾

ये ईमान लाएंगे? हलाकत है हर झूठे गुनेहगार के लिए।

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

जो अल्लाह की आयतों को सुनता है जो उस पर तिलावत की जाती हैं, फिर वो अड़ा रेहता है मुतकब्बिर बन कर

كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۸﴾

गोया के उस ने उस को सुना ही नहीं। इस लिए आप उसे दर्दनाक अज़ाब की बशारत सुना दीजिए।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْئَا اِۨتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ

और जब वो हमारी आयतों में से कुछ मालूम कर लेता है तो उसे मज़ाक़ बनाता है।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿۹﴾ؕ مِنْ وَّرَآئِهِمْ

उन लोगों के लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब है। उन के आगे

جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا

जहन्नम है। और उन के कुछ काम नहीं आएगा जो उन्हों ने कमाया था

وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

और न वो जो उन्हों ने अल्लाह के सिवा हिमायती बनाए हैं। बल्के उन के लिए भारी

عَظِيْمٌ ﴿۱۰﴾ؕ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ

अज़ाब होगा। ये हिदायत है। और जिन्हों ने अपने रब की आयात के साथ

رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿۱۱﴾ؑ اَللّٰهُ ع

कुफ्र किया उन के लिए दर्दनाक अज़ाब में से अज़ाब होगा। अल्लाह

الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ

ही ने तुम्हारे लिए समन्दर को ताबेअ किया, ताके कशती चले

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ

उस में अल्लाह के हुक्म से और ताके तुम अल्लाह का फ़ज़्ल तलब करो और ताके

تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ۚ وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ

शुक्र अदा करो। और उस ने तुम्हारे लिए अपनी तरफ से काम में लगा रखी हैं वो तमाम चीज़ें

وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं। बेशक उस में निशानियाँ हैं ऐसी क़ौम

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۳﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا

के लिए जो सोचती है। आप फरमा दीजिए उन लोगों से जो ईमान लाए हैं के वो मुआफ़ कर दें

لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا

उन को जो अल्लाह के अज़ाब की उम्मीद नहीं रखते ताके अल्लाह क़ौम को

بِمَا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۱۴﴾ مَنۡ عَمِلَ صَالِحًا

उन के करतूत की सज़ा दे। जिस ने नेक अमल किया

فَلِنَفۡسِهٖ ۚ وَمَنۡ اَسَآءَ فَعَلَيۡهَا ۚ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمۡ

तो अपने लिए (किया)। और जिस ने बुरा अमल किया तो उसी पर वबाल है। फिर तुम्हारे रब की तरफ़

تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۱۵﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ

तुम लौटाए जाओगे। और यक़ीनन हम ने बनी इस्राईल को

الۡكِتٰبَ وَ الۡحُكۡمَ وَ النُّبُوَّةَ وَ رَزَقۡنٰهُمۡ

किताब दी और हुकूमत और नुबूव्वत दी और हम ने उन्हें रोज़ी दी उम्दा चीज़ों में

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ فَضَّلۡنٰهُمۡ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۶﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ

से और हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। और हम ने उन को

بَيِّنٰتٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ ۚ فَمَا اخۡتَلَفُوۡۤا اِلَّا مِنۡۢ بَعۡدِ

दीन के बारे में खुली खुली दलीलें दीं। फिर उन्हों ने इखतिलाफ नहीं किया, मगर इस के बाद के

مَا جَآءَهُمُ الۡعِلۡمُ ۙ بَغۡيًۢا بَيۡنَهُمۡ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

उन के पास इल्म आया आपस की ज़िद की वजह से। यक़ीनन तेरा रब

يَقۡضِىۡ بَيۡنَهُمۡ يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ فِيۡمَا كَانُوۡا فِيۡهِ

उन के दरमियान क़यामत के दिन फैसला करेगा उस में जिस में वो इखतिलाफ़

يَخۡتَلِفُوۡنَ ﴿۱۷﴾ ثُمَّ جَعَلۡنٰكَ عَلٰى شَرِيۡعَةٍ مِّنَ الۡاَمۡرِ

कर रहे हैं। फिर हम ने आप को इस अम्रे दीन की एक शरीअत पर रखा है,

فَاتَّبِعۡهَا وَلَا تَتَّبِعۡ اَهۡوَآءَ الَّذِيۡنَ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۸﴾

इस लिए आप इस शरीअत का इत्तिबा कीजिए और उन की ख्वाहिशात के पीछे न चलिए जो इल्म नहीं रखते।

اِنَّهُمۡ لَنۡ يُّغۡنُوۡا عَنۡكَ مِنَ اللّٰهِ شَيۡـًٔا ؕ

यक़ीनन ये अल्लाह से आप के कुछ भी काम नहीं आ सकेंगे।

وَاِنَّ الظّٰلِمِيۡنَ بَعۡضُهُمۡ اَوۡلِيَآءُ بَعۡضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِىُّ

और यक़ीनन ये ज़ालिम लोग उन में से एक दूसरे के हिमायती हैं। और अल्लाह मुत्तक़ियों का

الۡمُتَّقِيۡنَ ﴿۱۹﴾ هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى

हिमायती है। ये क़ुरआन लोगों के लिए बसीरतों का हामिल है और हिदायत

وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٢٠ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ
और रहमत है ऐसी क़ौम के लिए जो यक़ीन रखती है। क्या उन लोगों ने जिन्हों ने

اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ
बुराइयाँ कमाई हैं ये गुमान कर रखा है के हम उन्हें उन की तरह बनाएंगे जो

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ
ईमान लाए और नेक अमल करते रहे हैं? के उन की ज़िन्दगी और उन की मौत

وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ۝٢١ وَخَلَقَ اللّٰهُ ع٢ ١٨
बराबर हो जाए? बुरा है जिस का वो फैसला कर रहे हैं। और अल्लाह ने

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ
आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और इस लिए ताके हर शख्स को

نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٢٢ اَفَرَءَيْتَ
उन के अमल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा। क्या फिर आप ने उस शख्स को

مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ
देखा जिस ने अपनी ख्वाहिश को अपना माबूद बना लिया है, और जिसे अल्लाह ने इल्म के बावजूद गुमराह कर दिया है,

وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ
और जिस के कान और दिल पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है, और जिस की आँखों पर पर्दा

غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ
रख दिया है। फिर उस को अल्लाह के बाद कौन हिदायत देगा?

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٢٣ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا
क्या फिर तुम नसीहत हासिल नहीं करते? और उन्हों ने कहा के ये ज़िन्दगी नहीं है मगर हमारी दुन्यवी

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ
ज़िन्दगी के हम मरते हैं और हम ज़िन्दा होते हैं और हमें हलाक नहीं करता

اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ
मगर ज़माना। और उन के पास इस की कोई दलील नहीं। ये सिर्फ

اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝٢٤ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ
गुमान कर रहे हैं। और जब उन पर हमारी साफ साफ आयतें तिलावत की जाती हैं

مَا كَانَ حُجَّتَهُمۡ اِلَّاۤ اَنۡ قَالُوا ائۡتُوۡا
तो उन की हुज्जत नहीं होती मगर ये के वो केहते हैं के तुम हमारे पास हमारे बाप

بِاٰبَآئِنَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ۝٢٥ قُلِ اللّٰهُ
दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। आप फरमा दीजिए के अल्लाह ही

يُحۡيِيۡكُمۡ ثُمَّ يُمِيۡتُكُمۡ ثُمَّ يَجۡمَعُكُمۡ اِلٰى يَوۡمِ
तुम्हें ज़िन्दा रखता है, फिर तुम्हें मौत देगा, फिर तुम्हें क़यामत के दिन इकठ्ठा

الۡقِيٰمَةِ لَا رَيۡبَ فِيۡهِ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَ النَّاسِ
करेगा जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग

ع ٥ ٣ ١٦ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٢٦ وَلِلّٰهِ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ
जानते नहीं। और अल्लाह के लिए आसमानों और ज़मीन की सल्तनत है।

وَيَوۡمَ تَقُوۡمُ السَّاعَةُ يَوۡمَئِذٍ يَّخۡسَرُ الۡمُبۡطِلُوۡنَ ۝٢٧
और जिस दिन क़यामत क़ाइम होगी उस दिन बातिलपरस्त खसारा उठाएंगे।

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ اُمَّةٍ تُدۡعٰۤى
और आप देखोगे हर उम्मत को घुटनों के बल बैठी हुई। हर उम्मत अपने नामए आमाल की तरफ़

اِلٰى كِتٰبِهَا اَلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝٢٨
बुलाई जाएगी। (कहा जाएगा के) आज तुम्हें तुम्हारे आमाल का बदला दिया जाएगा।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنۡطِقُ عَلَيۡكُمۡ بِالۡحَقِّ اِنَّا
ये हमारा दफ्तर है जो तुम्हारे खिलाफ ठीक बोल रहा है। यक़ीनन हम

كُنَّا نَسۡتَنۡسِخُ مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝٢٩
लिखवा लिया करते थे जो तुम अमल करते थे।

فَاَمَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدۡخِلُهُمۡ
फिर जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे तो उन को उन का रब

رَبُّهُمۡ فِىۡ رَحۡمَتِهٖ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡمُبِيۡنُ ۝٣٠
अपनी रहमत में दाखिल करेगा। ये खुली कामयाबी है।

وَاَمَّا الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا اَفَلَمۡ تَكُنۡ اٰيٰتِىۡ تُتۡلٰى
और जिन्हों ने कुफ्र किया तो (उन्हें कहा जाएगा के) क्या मेरी आयतें तुम पर तिलावत नहीं

عَلَيۡكُمۡ فَاسۡتَكۡبَرۡتُمۡ وَ كُنۡتُمۡ قَوۡمًا مُّجۡرِمِيۡنَ ﴿۳۱﴾

की जाती थीं, फिर तुम तकब्बुर करते थे और तुम मुजरिम क़ौम थे?

وَ اِذَا قِيۡلَ اِنَّ وَعۡدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ

और जब कहा जाता है के यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है और क़यामत

لَا رَيۡبَ فِيۡهَا قُلۡتُمۡ مَّا نَدۡرِىۡ مَا السَّاعَةُ ۙ

में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहा के हम नहीं जानते के क़यामत क्या चीज़ है?

اِنۡ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحۡنُ بِمُسۡتَيۡقِنِيۡنَ ﴿۳۲﴾

हम तो गुमान करते हैं थोड़ा सा और हमें यक़ीन नहीं।

وَبَدَا لَهُمۡ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوۡا وَحَاقَ بِهِمۡ

और उन के सामने उन के आमाल की बुराई खुल जाएगी, और उन को घेर लेगा

مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿۳۳﴾ وَقِيۡلَ الۡيَوۡمَ نَنۡسٰىكُمۡ

वो अज़ाब जिस का वो इस्तिहज़ा किया करते थे। और कहा जाएगा के आज हम तुम्हें भुला देंगे,

كَمَا نَسِيۡتُمۡ لِقَآءَ يَوۡمِكُمۡ هٰذَا وَمَاۡوٰىكُمُ النَّارُ

जिस तरह तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला रखा था और तुम्हारा ठिकाना दोज़ख है

وَمَا لَكُمۡ مِّنۡ نّٰصِرِيۡنَ ﴿۳۴﴾ ذٰلِكُمۡ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذۡتُمۡ

और तुम्हारे लिए कोई मददगार नहीं होगा। ये इस वजह से के तुम ने

اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتۡكُمُ الۡحَيٰوةُ الدُّنۡيَا ۚ

अल्लाह की आयतों को मज़ाक़ बनाया और तुम्हें दुन्यवी ज़िन्दगी ने धोके में डाले रखा।

فَالۡيَوۡمَ لَا يُخۡرَجُوۡنَ مِنۡهَا وَلَا هُمۡ يُسۡتَعۡتَبُوۡنَ ﴿۳۵﴾

फिर आज वो वहाँ से निकाले नहीं जाएंगे और न उन से मुआफी तलब की जाएगी।

فَلِلّٰهِ الۡحَمۡدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الۡاَرۡضِ رَبِّ

फिर अल्लाह ही के लिए तमाम तारीफें हैं जो आसमानों का रब है और ज़मीन का रब है, तमाम जहानों

الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۳۶﴾ وَلَهُ الۡكِبۡرِيَآءُ فِى السَّمٰوٰتِ

का रब है। और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों में

وَالۡاَرۡضِ ۚ وَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ﴿۳۷﴾ ع ۴

और ज़मीन में। और वो अल्लाह ज़बर्दस्त है, हिक्मत वाला है।